

“गांव की खुशहाली—देश की खुशहाली”



पंत प्रसार संदेश



वर्ष : 20, अंक : 1

(जनवरी-मार्च, 2025)

कुलपति संदेश

उत्तराखण्ड के कृषकों हेतु क्षेत्र आधारित आधुनिक उन्नत कृषि तकनीकें यथा कुक्कुट पालन, मौन पालन, दुग्ध उत्पादन, पीतोष्ण फलोत्पादन, सब्जी उत्पादन, औद्यानिकी एवं सगंध पौध उत्पादन, मोटे अनाजों का मूल्यवर्धन, मत्स्य पालन आदि प्रदेश के मध्यम एवं लघु कृषकों के लिए स्वरोजगार का मार्ग प्रशस्त कर सकती हैं। इन उत्पादों की गुणवत्तायुक्त पैकेजिंग व ब्राण्डिंग कृषक के आय में कई गुना वृद्धि कर सकते हैं। किसान साथियों आप सभी ने वर्ष 2023 “अन्तर्राष्ट्रीय ग्लोबल वर्ष” को उत्सव के रूप में मनाने में अपना भरपूर योगदान दिया। उत्तराखण्ड में ये फसलें (मोटे अनाज) बड़े क्षेत्रफल में उगायी जाती हैं और इन फसलों का उच्च पोषण मान, कम उत्पादन लागत, वर्षा आधारित खेती, बदलते पर्यावरण की स्थिति में पर्याप्त उपज देने की क्षमता, इनके खेती हेतु न्यूनतम उर्वरक व कीटनाशक रसायनों के उपयोग के कारण इन्हें और भी प्रासंगिक और लाभदायक बना देता है। इन फसलों के अनेक मूल्यवर्धित उत्पाद जैसे मल्टीग्रेन आटा, बिस्किट, केक, लड्डू, सेवई, पापड़, नमकीन, पास्ता, मोमोज, पौस्टिक पेय पदार्थ आदि बनाये जा रहे हैं। कृषक इनको अपनाकर अपनी आजीविका संवर्धन कर सकते हैं। विश्वविद्यालय की विभिन्न इकाईयाँ एवं कृषि विज्ञान केन्द्र उन्नत कृषि तकनीकों को दूरस्थ क्षेत्र के कृषकों तक पहुँचा कर उनके आजीविका सुधार हेतु अथक परिश्रम करते हैं। कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा प्राकृतिक खेती, जैविक खेती व अन्य अनेक आय वृद्धि जनित प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये जा रहे हैं। आज आवश्यकता है कि ऐसे कार्यक्रम जनपद के ज्यादा से ज्यादा ग्रामों में आयोजित किये जायें, जिसे युवा अपनाकर स्वावलम्बी और आत्मनिर्भर बनें और उनका पलायन भी रुके।



मुझे यह उल्लेखित करते हुए हर्ष की अनुभूति हो रही है कि प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा “पंत प्रसार संदेश” नामक पत्रिका का नियमित रूप से प्रकाशन किया जा रहा है। इस पत्रिका में अनेक कृषकोपयोगी जानकारी, आगामी त्रैमास के सम सामयिक कृषि कार्यक्रम आदि समावेशित होते हैं। मैं पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु डा. जितेन्द्र क्वात्रा, निदेशक प्रसार शिक्षा एवं डा. बी.डी. सिंह, प्राध्यापक, प्रसार शिक्षा निदेशालय को बधाई देता हूँ। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका रेखीय विभागों के प्रसार कार्यकर्ताओं के मार्गदर्शन एवं कृषकों हेतु स्वरोजगार की राह दिखाने में पथप्रदर्शक की भूमिका निभायेगी।

(Man Mohan Singh Chauhan)
(डा० मनमोहन सिंह चौहान)
कुलपति

संदेश

भारत एक कृषि प्रधान देश है, जहाँ लगभग 65 प्रतिशत आबादी गांवों में रहती है, जो अधिकांशतः कृषि पर निर्भर हैं। कृषक बन्धु सदियों से कृषि, उद्यान एवं कृषि के अन्य घटकों को अपनाकर कृषि विविधीकरण के विभिन्न आयामों को अपनाते हुए अपना जीविकोपार्जन करते आ रहे हैं। दलहनी फसल भारतीय कृषि के अभिन्न अंग है। ये फसलें वायवीय नत्रजन स्थिरीकरण द्वारा पौधों को प्राकृतिक रूप से उर्वरक प्रदान करते हैं, जिससे इन्हें ‘उर्वरक का खजाना’ नाम भी दिया गया है। समस्त दलहनी फसलें प्रोटीन प्राप्ति का सुलभतम स्रोत के रूप में जानी जाती है। मैं कृषकों से अपील करूँगा कि वे अपने भोजन में दलहनों का समावेश करें। साथ ही किसी भी प्रकार की दलहन तकनीकी जानकारी हेतु हमसे सम्पर्क कर सकते हैं।



कृषि विश्वविद्यालयों एवं भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के विभिन्न संस्थानों द्वारा कृषि आधारित परीक्षणों एवं प्रदर्शनों का आयोजन किया जाता है। इनसे प्राप्त परिणामों के आधार पर कृषकोपयोगी तकनीकें विकसित की जाती हैं, जो कृषकों के आवश्यकता के अनुरूप एवं कम लागत की होती हैं। इन नवीनतम विकसित कृषि तकनीकों को सुदूर अंतिम पायदान पर बैठे कृषक तक ले जाकर कृषकों की आय में वृद्धि की जा सकती है। इसी क्रम में, लघु एवं मध्यम किसानों के लिए कृषि के कुछ उद्यम जैसे नर्सरी प्रबन्धन, मुर्गी पालन, मधुमक्खी पालन, मशरूम की खेती व दुग्ध उत्पादन आदि विकल्प हैं, जिसकी जानकारी कृषकों तक पहुँचाने के लिए प्रसार शिक्षा निदेशालय, गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पंतनगर के मार्गदर्शन में विभिन्न जनपदों में स्थित कृषि विज्ञान केन्द्र पूरी लगन से काम कर रहे हैं। मुझे यह जानकर हर्ष हुआ है कि प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा “पंत प्रसार संदेश” नामक त्रैमासिक पत्रिका प्रकाशित की जाती है। मुझे विश्वास है कि यह पत्रिका कृषकों एवं कृषि आधारित प्रसार कार्यकर्ताओं हेतु उपयोगी साबित होगी।

(G. R. D. Singh)

(डा० जी०पी० दीक्षित)
निदेशक

भा.कृ.अ.प.—भारतीय दलहन अनुसंधान संस्थान, कानपुर

हरित क्रान्ति के फलस्वरूप भारतवर्ष में कृषि क्षेत्र में महत्वपूर्ण प्रगति हुई है, जिसके परिणामस्वरूप खाद्यान्न उत्पादन में दोगुनी से अधिक वृद्धि हुई और देश खाद्यान्न में आत्मनिर्भर हुआ है। सीमान्त, लघु और विशेषकर उत्तराखण्ड के पर्वतीय क्षेत्र के कृषक इस विकास प्रक्रिया से भली भाँति जुड़ नहीं पाते हैं। इस परिप्रेक्ष्य में यह आवश्यक हो जाता है कि इन कृषकों की आवश्यकतानुसार कृषि तकनीकें विकसित की जाएँ। इसी के दृष्टिगत कृषि जनित सभी व्यवसायों में कुशल प्रबन्धन, समन्वित फसल प्रणाली, प्राकृतिक खेती, जैविक खेती तथा उन्नत बीजों एवं तकनीकों के समेकित प्रयोग पर बल दिये जाने की आवश्यकता है। उत्तराखण्ड के पर्वतीय क्षेत्रों में, जहाँ एक ओर जोत बिखरी एवं कृषि वर्षाश्रित है, वहीं दूसरी ओर यहाँ उन्नत कृषि तकनीकों का अभाव भी है। अतः यहाँ के कृषकों को आत्मनिर्भर बनाना अत्यधिक चुनौतीपूर्ण कार्य है। यह सर्वविदित है कि गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय एवं अधीनस्थ कृषि विज्ञान केन्द्रों के वैज्ञानिकों के अथक प्रयास द्वारा कृषकों की आजीविका में सुधार लाने हेतु सतत प्रयत्नशील है, जो कि अत्यन्त सराहनीय है। मुझे यहाँ जोड़ना है कि कृषि के विकास में तिलहनों की बहुत बड़ी भूमिका है और इस संस्थान द्वारा भी तिलहन सम्बन्धी अनेक तकनीक विकसित किये गये हैं। मैं कृषकों से आग्रह करूँगा कि वे तिलहन उत्पादन तकनीक, मूल्यवर्धित उत्पादों आदि के बारे में जानकारी प्राप्त करने हेतु हमसे बेझिझक सम्पर्क करें।



मुझे यह जानकर अत्यन्त हर्ष है कि विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा कृषकोपयोगी त्रैमासिक पत्रिका “पंत प्रसार संदेश” का प्रकाशन किया जा रहा है। मुझे आशा ही नहीं, अपितु पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका जहाँ एक ओर कृषि कार्य संचालन में प्रभावी भूमिका निभायेगी, वहीं दूसरी ओर कृषकों की आजीविका वृद्धि में भी सहायक सिद्ध होगी। पत्रिका के आगामी अंक जनवरी-मार्च, 2025 के सफल प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

(A. R. K. Maithur)
(डा० आर०के० माथुर)
निदेशक

भा.कृ.अ.प.—भारतीय तिलहन अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद

आगामी त्रैमास के कृषि कार्य : अप्रैल-जून

अप्रैल : मैदानी क्षेत्र-फसल

टमाटर : फसल में आवश्यकतानुसार निराई-गुड़ाई व सिंचाई करें। फल छेदक कीट के नियंत्रण हेतु रसायन का प्रयोग करें।

लहसुन, पालक, मेथी, धनियाँ : लहसुन की खुदाई करें। तीन दिन तक खेत में ही रहने दें। बाद में छाया में सुखाने की व्यवस्था करें तथा भण्डारण करें।

भिण्डी, लोबिया, राजमा : तैयार फलियों को तोड़कर विपणन की व्यवस्था करें। यदि फसलें बीज वाली हैं तो तैयार फलियों को तोड़कर सुखायें व बीज निकालें।

अप्रैल : पर्वतीय क्षेत्र-सब्जी

आलू : फसल में आवश्यकतानुसार निराई-गुड़ाई व सिंचाई करें। झुलसा बीमारी से बचाव के लिये संस्तुत रसायन का छिड़काव करें।

टमाटर व बैंगन, शिमला मिर्च : फसल में आवश्यकतानुसार निराई-गुड़ाई व सिंचाई करें। घाटी में तैयार फलों को तोड़कर बाजार भेजें। झुलसा बीमारी के नियंत्रण हेतु संस्तुत रसायन का छिड़काव करें।

अप्रैल : मैदानी क्षेत्र-फल

आम : बाग की सिंचाई करें। आन्तरिक ऊतकक्षय रोग की रोकथाम के लिए बोरेक्स 0.8 प्रतिशत का छिड़काव करें। छोटी पत्ती रोग के नियंत्रण हेतु जिंक सल्फेट 0.5 प्रतिशत का छिड़काव करें।

लीची : बाग की 15 दिन के अन्तराल पर सिंचाई करें। छोटी पत्ती रोग के नियंत्रण हेतु जिंक सल्फेट 0.5 प्रतिशत का छिड़काव करें।

अप्रैल : पर्वतीय क्षेत्र-फल

सेब और नाशपाती : पौधशाला में जमे नए पौधों की सिंचाई करें। बाग में जिंक सल्फेट व बोरेक्स का छिड़काव करें। अधिक फले पेड़ों में फलों की छाँटाई 25 प्रति नाली के हिसाब से करें।

आड़ू, खुबानी, आलूबुखारा, बादाम : जिंक सल्फेट और बोरेक्स का छिड़काव करें। बाग की चिड़ियों से रक्षा करें।

मई : मैदानी क्षेत्र-फसल

सूरजमुखी : फसल में दाना पड़ते समय सिंचाई करें। तोते आदि पक्षियों से परिपक्व फसल की सुरक्षा करें। फसल में बिहार बालदार रूँडी तथा जैसिड्स का प्रकोप होने पर संस्तुत कीटनाशी रसायनों का छिड़काव करें।

धान : मध्यम एवं देर से पकने वाली प्रजातियों की नर्सरी माह के अन्तिम सप्ताह में डाल दें। फसल से अच्छा उत्पादन लेने हेतु उन्नत प्रजातियों का चयन व संस्तुत सस्य क्रियायें अपनायें।

मई : पर्वतीय क्षेत्र-फसल

गेहूँ, जौ, सरसों, चना, मटर एवं मसूर : इन फसलों की समय पर कटाई कर लें एवं सूखने पर गहाई कर उपज को अच्छी तरह भण्डारित कर लें।

झंगोरा (मादिरा/साँवा) : अधिक उत्पादन लेने हेतु उन्नतशील प्रजातियों का चयन करें, जिनकी बुवाई ऊँचाई वाले क्षेत्रों में माह के प्रथम पखवाड़े तथा मध्यम व कम ऊँचाई वाले क्षेत्रों में माह के द्वितीय पखवाड़े में करें।

धान : मध्यम ऊँचे क्षेत्रों में सिंचित दषा (तलाऊँ) में रोपाई हेतु धान की नर्सरी माह के प्रथम पखवाड़े एवं घाटियों व कम ऊँचे क्षेत्रों में माह के द्वितीय पखवाड़े में रखें।

मई : मैदानी क्षेत्र-सब्जी

फूल गोभी, पात गोभी, गांठ गोभी, मूली, गाजर व शलजम : बीज वाली फसलों के कटाई का काम पूरा करें। बीज की सफाई करें और इतना सुखाये की नमी 8 प्रतिशत से ज्यादा न हो।

प्याज : यदि आवश्यक हो तो एक हल्की सी सिंचाई करें। आखिरी सप्ताह में पत्तियों को जमीन की सतह से झुका दे इससे गांठे सख्त हो जाती है।

लहसुन : अतिशीघ्र खुदाई करें। दो दिन तक खेत में सूखने दें बाद में छोटे-छोटे बण्डल बनाकर नमी रहित स्थान पर 10 दिन तक सुखायें तथा भण्डारण करें।

मई : पर्वतीय क्षेत्र-सब्जी

आलू : फसल में आवश्यकतानुसार निराई-गुड़ाई व सिंचाई करें। झुलसा रोग के लक्षण दिखें तो संस्तुत रसायन का छिड़काव करें। फसल कमजोर दिखाई दे तो 50 कि.ग्रा./है. यूरिया खड़ी फसल में डालें।

टमाटर व बैंगन : तैयार फलों की तुड़ाई कर बाजार भेजने की व्यवस्था करें। फसल में आवश्यकतानुसार निराई-गुड़ाई व सिंचाई करें।

मई : मैदानी क्षेत्र-फल

आम : नए बाग लगाने के लिये रेखांकन करके गड्ढे खोदें व बोरेक्स का छिड़काव करें।

केला : सप्ताह के अंतराल पर सिंचाई करें। अवांछित पत्तियों को निकालें, नये बाग लगाने के लिए गड्ढे खोदें।

नीबूवर्गीय फल : नये बाग लगाने के लिए रेखांकन करके गड्ढे खोद लें। बाग में 15 दिन के अंतराल पर सिंचाई करें।

मई : पर्वतीय क्षेत्र-फल

सेब : जिन स्थानों पर सिंचाई की सुविधा हो, उन बागों की सिंचाई करें। पत्ती खाने वाले कीट के नियंत्रण हेतु रसायन का छिड़काव करें।

आड़ू व खुबानी : फलों की चिड़ियाँ व अन्य जंगली जानवरों से रक्षा करें। अगेती किस्मों के फलों को तोड़कर बाजार भेजें।

जून : मैदानी क्षेत्र-फसल

धान : मध्यम शीघ्र एवं शीघ्र पकने वाली प्रजातियों की नर्सरी माह के प्रथम पखवाड़े एवं सुगन्धित धान की दूसरे पखवाड़े में डालें। उचित सस्य क्रियायें अपनाकर स्वस्थ नर्सरी तैयार करें एवं पौध 21-25 दिन की होने पर रोपाई कर लें।

मक्का : फसल की बुवाई माह के प्रथम पखवाड़े में कर लें। बुवाई हेतु उपयुक्त संकर/संकुल प्रजातियों का चयन, बीज की मात्रा, बीजोपचार, बुवाई की विधि, उर्वरकों व खरपतवारनाशी रसायन का प्रयोग तथा अन्य सस्य क्रियायें संस्तुति के अनुसार करें।

जून : पर्वतीय क्षेत्र-फसल

मंडुवा, काकुन (कौणी) व रामदाना (चुआ/चौलाई/मारसा) : मध्यम एवं कम ऊँचाई वाले क्षेत्रों में इन फसलों की बुवाई प्रथम पखवाड़े में करें। अधिक उत्पादन हेतु संस्तुत प्रजातियों का प्रयोग करें। गत माह में बोयी गयी फसलों में विरलीकरण, निराई-गुड़ाई, खरपतवारनाशी रसायनों का प्रयोग एवं वर्षा के पश्चात् नत्रजन की टॉप-ड्रेसिंग संस्तुति अनुसार करें।

सोयाबीन : मध्यम एवं कम ऊँचाई वाले क्षेत्रों में फसल की बुवाई माह के प्रथम पखवाड़े में करें।

धान : जेठी धान की बुवाई प्रथम सप्ताह तक कर लें। प्रजाति का चुनाव, बीज की मात्रा, बीजोपचार, बुवाई, उर्वरकों का प्रयोग व अन्य सस्य क्रियायें संस्तुति अनुसार करें।

जून : मैदानी क्षेत्र-सब्जी

बैंगन : फसल से तैयार फलों को तोड़कर बाजार भेजें। बीज वाली फसल से बीज निकालें। जुलाई-अगस्त में रोपाई हेतु पौधशाला में बीज 1000-1200 ग्राम/है. की दर से डालें।

भिण्डी, लोबिया तथा राजमा : भिण्डी के तैयार फलों को तोड़कर बाजार भेजें। मई माह में बुवाई की गयी भिण्डी, लोबिया व राजमा में आवश्यकतानुसार निराई-गुड़ाई व सिंचाई करें।

मिर्च : आवश्यकतानुसार निराई-गुड़ाई करें। पकी हुई मिर्च को तोड़कर सुखायें तथा बीज निकालें। वर्षा ऋतु की फसल के लिए 1000-1500 ग्राम बीज/है. की दर से पौधशाला तैयार करें।

जून : पर्वतीय क्षेत्र-सब्जी

आलू : फसल में आवश्यकतानुसार निराई-गुड़ाई करें। झुलसा के

नियंत्रण हेतु संस्तुत रसायन का छिड़काव करें। फसल में 50 किलोग्राम गूरिया/है. डालें।

टमाटर, बैंगन, मिर्च, शिमला मिर्च, फ्रासबीन, भिण्डी, लोबिया : फसल में आवश्यकतानुसार निराई-गुड़ाई व सिंचाई करें। कीट रोग दिखते ही संस्तुत रसायन का छिड़काव करें।

जून : मैदानी क्षेत्र-फल

आम : बाग की सफाई करें। नए बाग लगाने के लिए गड़दों की भराई का कार्य पूर्ण करें। मध्यम समय में परिपक्व होने वाली किस्मों को तोड़कर बाजार भेजें। पौधशाला में कलम बांधें एवं इसके लिए चीरा अथवा स्फान कलम विधि का प्रयोग करें।

नीबूवर्गीय फल : नए बाग लगाने के लिए गड़दों की भराई करें। जल निकास की नालियों की सफाई करें। फलदार पेड़ों में नत्रजन व पोटेश की दूसरी मात्रा का प्रयोग करें।

जून : पर्वतीय क्षेत्र-फल

सेब, नाशपाती, आड़ू, आलूबुखारा, खुबानी : बाग में जल निकास की व्यवस्था करें। बाग में जल निकास की नालियाँ बना लें। तैयार फलों की समय पर तुड़ाई कर विपणन करें।

अखिल भारतीय किसान मेला एवं कृषि उद्योग प्रदर्शनी का सफल आयोजन



किसान मेले का उद्घाटन करते श्री भगत सिंह कोश्यारी

विश्वविद्यालय द्वारा 117वाँ अखिल भारतीय किसान मेला का आयोजन मार्च 07-10, 2025 को किया गया। उद्घाटन अवसर पर मा. पूर्व राज्यपाल महाराष्ट्र एवं पूर्व मुख्यमंत्री, उत्तराखण्ड, श्री भगत सिंह कोश्यारी ने कहा कि इस मेले में प्रदर्शनी के द्वारा उपलब्ध कराई जा रही तकनीकी जानकारी एवं कृषि निवेश इत्यादि से किसान भाई, बहनें एवं युवा किसान विशेष तौर पर लाभान्वित होंगे। कृषको, वैज्ञानिकों व कृषि निवेश फर्मों को एक मंच प्रदान करने वाला यह मेला निश्चित तौर पर 'कृषि कुम्भ' उपाधि हेतु सर्वोपयुक्त है। श्री अजय भट्ट, मा. सांसद, नैनीताल-ऊधमसिंहनगर ने कहा कि कृषि विज्ञान केन्द्रों को सुदृढ़ कर इनके द्वारा विकसित तकनीक को सुदूर क्षेत्र तक पहुंचाया जा सकता है। कुलपति, डा. मनमोहन सिंह चौहान ने कहा कि वर्तमान में विशेषकर, विश्वविद्यालय खेती के लागत को कम रखते हुए उपज बढ़ाने की सम्भावनाओं पर विशेष ध्यान दे रहा है। मुख्य अतिथि महोदय द्वारा उन्नत खेती करने के साथ-साथ कृषकों को इन विधाओं से जोड़ने के उपलक्ष में राज्य के नौ प्रगतिशील कृषकों को प्रतीक चिन्ह एवं प्रमाण-पत्र देकर सम्मानित किया गया। मेले में अनुसंधान केन्द्रों द्वारा नवीनतम प्रजातियों के बीज, शाक-भाजी एवं फलों के उन्नत बीजों व पौधों की बिक्री, किसानोपयोगी उन्नत तकनीकों की प्रदर्शनी आदि का आयोजन किया गया। मेले के समापन अवसर पर मुख्य अतिथि, जिलाधिकारी-ऊधम सिंह नगर, श्री नितिन सिंह भदौरिया ने कहा कि पंत विश्वविद्यालय प्रदेश की विशेषताओं एवं आवश्यकताओं के अनुरूप शोध, शिक्षण एवं प्रसार करते हुए उत्तराखण्ड के किसानों, विशेषकर

पर्वतीय क्षेत्र के किसानों की आय में वृद्धि कर उन्हें कृषि से जोड़े रखने व पलायन रोकने में अपनी सक्रिय भूमिका निभा रहा है।

कृषि विज्ञान केन्द्रों की गतिविधियाँ

कृषि विज्ञान केन्द्र, मटेला (अल्मोड़ा)

- केन्द्र की वैज्ञानिक सलाहकार समिति की 20वीं बैठक का आयोजन डा. जितेन्द्र क्वात्रा, निदेशक प्रसार शिक्षा, गो.ब. पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय पंतनगर की अध्यक्षता में दिनांक 24 मार्च 2025 को किया गया। बैठक में डा. लक्ष्मीकांत निदेशक, विवेकानन्द पर्वतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, अल्मोड़ा द्वारा भी अनेक सलाह दिये गये। कार्यक्रम में अन्य रेखीय विभागों के अधिकारी एवं कृषक सदस्यों तथा केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा प्रतिभाग किया गया। डा. जितेन्द्र क्वात्रा, निदेशक प्रसार शिक्षा द्वारा सुझाव दिया कि अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन में विवेकानन्द पर्वतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, अल्मोड़ा द्वारा नवीनतम प्रजातियों का समावेश किया जाये। केन्द्र के प्रभारी अधिकारी द्वारा 19 वीं बैठक के कार्यवृत्त की अनुपालन आख्या तथा वर्ष, 2024 में किये गये विभिन्न प्रसार कार्यों की प्रगति एवं वर्ष, 2025 की कार्ययोजना का प्रस्तुतिकरण किया गया।
- कृषि विभाग, अल्मोड़ा के सहयोग से दिनांक 24 फरवरी, 2025 को पी.एम. किसान योजना के तहत 19वीं किस्त का हस्तांतरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें मा. प्रधानमंत्री द्वारा कृषकों को सम्बोधित किया गया एवं पी.एम. किसान योजना/किसान सम्मान निधि कार्यक्रम का सजीव प्रसारण कृषकों को दिखाया गया।
- दिनांक 04.03.2025 को केन्द्र में प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन पशु अनुवांशिकी एवं प्रजनन विभाग, पशु चिकित्सा विज्ञान, पंतनगर द्वारा किया गया। इसी क्रम में केन्द्र द्वारा कलस्टर अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन के अन्तर्गत 03 प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन क्रमशः



स्वरोजगार आधारित प्रशिक्षण

- दिनांक 13.02.2025, 17.02.2025 एवं 19.03.2025 को किया गया, जिसमें 151 कृषकों द्वारा प्रतिभाग किया गया।
- दिनांक मार्च 26, 2025 को विवेकानन्द पर्वतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, हवालबाग, अल्मोड़ा में किसान मेले का आयोजन किया गया। उक्त मेले में केन्द्र द्वारा केन्द्र की गतिविधियों का प्रदर्शन एक स्टाल के माध्यम से किया गया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, ग्वालदम (चमोली)

- केन्द्र के विशेषज्ञों द्वारा State Action Plan के अन्तर्गत इस अवधि में Management of white grub in Potato विषय एवं Management of Stemphylium blight & purple blotch विषय पर छः प्रक्षेत्र परीक्षणों का आयोजन किया गया।
- केन्द्र के विशेषज्ञों द्वारा पादप सुरक्षा विषय के अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन द्वारा तकनीक हस्तान्तरण अन्तर्गत Management of Yellow Rust in Wheat विषय पर जनपद के सात ग्रामों में 5.0 हैक्टेयर क्षेत्रफल में अग्रिम पंक्ति प्रदर्शनों का आयोजन किया गया। पादप सुरक्षा विषय के अन्तर्गत



ही Integrated Pest Management of Aphid Infestation in Toria विषय पर जनपद के छः ग्रामों में 2.0 है. क्षेत्रफल में अग्रिम पंक्ति प्रदर्शनों का आयोजन किया गया।

- केन्द्र द्वारा Pilot Project on crop diversification के अन्तर्गत कृषि विविधिकरण विषय पर एक प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। इसी प्रकार उपरोक्त विषयान्तर्गत दिनांक 25-26 मार्च, 2025 को एक अन्य प्रशिक्षण का आयोजन प्रसार कार्यकर्ताओं हेतु किया गया।
- केन्द्र पर उद्यान परियोजना के अन्तर्गत चल रही छोटी फल पौधशाला (कीवी एवं अखरोट) तथा CM-RKVY परियोजना के अन्तर्गत सेब एवं नाशपाती के मातृवृक्ष प्रखण्ड स्थापित करने हेतु उन्नत प्रजाति के फल पौधों का रोपण किया गया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, लोहाघाट (चम्पावत)

- केन्द्र द्वारा सशस्त्र सीमा बल चम्पावत एवं ब्रुक इन्डिया के सहयोग से मशरूम उत्पादन, नर्सरी प्रबन्धन एवं सॉफ्ट ट्वाय बनाने के तकनीक विषय पर 03 प्रशिक्षणों का आयोजन किया गया। केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा 17 कृषकों के प्रक्षेत्र पर भ्रमण कर कुल 94 कृषकों की समस्याओं का समाधान किया गया। इसी क्रम में केन्द्र द्वारा 3 कृषक वैज्ञानिक संवाद का आयोजन किया गया, जिसमें 114 कृषक एवं कृषक महिलाओं ने प्रतिभाग किया।
- केन्द्र द्वारा ऑन फार्म ट्रायल के अन्तर्गत पशुपालन विषय में संकर नस्ल की गायों में बार-बार प्रजनन समस्या का प्रबन्धन व प्रारम्भिक आयु (0 से 4 सप्ताह) में चूजों का ब्रूडिंग प्रबन्धन विषय पर दो ऑन फार्म ट्रायल लगाये गये। शिमलामिर्च, कदू, लौकी, टमाटर पत्तागोभी सब्जियों की उच्च गुणवत्तायुक्त 9800 पौध तथा कीवी की 138 फल पौध कृषकों को उपलब्ध करायी गयी।
- दिनांक 13.02.2025 को केन्द्र पर वैज्ञानिक सलाहकार समिति की 28 वीं बैठक का आयोजन डा. जितेन्द्र क्वात्रा, निदेशक प्रसार शिक्षा, पन्तनगर की अध्यक्षता में हुआ, इस बैठक में पन्तनगर के वरिष्ठ वैज्ञानिकों के साथ-साथ रखीय विभागों के अधिकारियों व समिति के मा. सदस्यों ने प्रतिभाग कर केन्द्र की आगामी कार्ययोजना को बेहतर बनाने हेतु महत्वपूर्ण सुझाव दिये।
- भा.कृ.अनु.प.-कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान (अटारी), लुधियाना द्वारा दिनांक 11.02.2025 को परिषद् का स्थापना दिवस मनाया गया। इस अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में केन्द्र की प्रभारी अधिकारी डा. दीपाली तिवारी पाण्डेय को Performance Excellence Award (Woman) से सम्मानित किया गया।
- डा. दुर्गेश पन्त, महानिदेशक यूकोस्ट, देहरादून एवं डा. परविन्दर श्योराण, निदेशक, भा.कृ.अनु.प.-कृषि प्रौद्योगिकी अनुसंधान संस्थान (अटारी), लुधियाना द्वारा दिनांक 24.03.2025 एवं 27.03.2025 को भ्रमण कर केन्द्र द्वारा चलाये जा रहे कार्यक्रमों व केन्द्र पर स्थापित विभिन्न प्रदर्शन इकाईयों का अवलोकन कर महत्वपूर्ण सुझाव दिये गये।
- केन्द्र पर संचालित निकरा परियोजना की समीक्षा बैठक Central Research Institute for Dryland Agriculture, (CRIDA), Hyderabad में दिनांक 29-31 जनवरी, 2025 को आयोजित



डा. परविन्दर श्योराण, निदेशक अटारी का भ्रमण 2025 को भ्रमण कर केन्द्र द्वारा चलाये जा रहे कार्यक्रमों व केन्द्र पर स्थापित विभिन्न प्रदर्शन इकाईयों का अवलोकन कर महत्वपूर्ण सुझाव दिये गये।

किया गया। इसी दौरान आयोजित कार्यशाला में केन्द्र को Best Presentation Award प्रदान किया गया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, ढकरानी (देहरादून)

- ऑन फार्म ट्रायल के अन्तर्गत गेहूं पर 02, सब्जी पर 01, गोवंश में दुग्ध उत्पादन बढ़ाने हेतु संतुलित आहार में 10 परीक्षण लगाये गये। अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन के अन्तर्गत गेहूं में 02, मसूर में 01, तिलहनी में 01, स्ट्राबेरी में 02, ट्रायबल सब प्लान के अन्तर्गत आलू में 01, पशुचिकित्सा में 01 प्रदर्शन आयोजित किया गया।
- केन्द्र द्वारा कुल 13 प्रशिक्षणों का आयोजन कर 320 कृषकों को लाभान्वित किया गया। देहरादून कारागार के 33 कैदियों के कौशल विकास हेतु हर्बल रंग बनाने का प्रशिक्षण दिया गया। एफ.पी.ओ. परियोजना के अन्तर्गत कुल 04 प्रशिक्षणों का आयोजन किया गया, जिसमें कुल 225 प्रशिक्षणार्थियों द्वारा प्रतिभाग किया गया। कृषक वैज्ञानिक संवाद के अन्तर्गत कुल आठ बार कृषकों से वार्तालाप किया गया, जिसमें कुल 185 कृषकों ने प्रतिभाग किया।
- नवीनतम विकसित कृषि तकनीकों के व्यापक प्रचार-प्रसार हेतु मेलों व प्रदर्शनियों के अन्तर्गत 17वें कृषि विज्ञान सम्मेलन, पंतनगर में फरवरी 20-22, 2025, पंतनगर किसान मेला, मार्च 07-10, 2025, पुष्प प्रदर्शनी, राजभवन देहरादून दिनांक मार्च 07-09, 2025 तथा राष्ट्रीय डेयरी मेला, करनाल दिनांक 27 फरवरी से 01 मार्च, 2025 में स्टॉल एवं गोष्ठियों पर व्याख्यान द्वारा सहभागिता दर्ज करायी गयी।
- अच्छी किस्म के पौधों के क्षेत्र विस्तार हेतु केन्द्र द्वारा कदूदूर्गीय सब्जियाँ, टमाटर पौध, मोरिंगा पौध विक्रय किये गये। इसके अतिरिक्त केन्द्र पर स्थापित बकरी प्रदर्शन इकाई द्वारा 10 बकरियाँ विक्रय की गयी।



हर्बल रंग बनाने का प्रशिक्षण

कृषि विज्ञान केन्द्र, धनौरी (हरिद्वार)

- केन्द्र द्वारा पशुओं में पुनः प्रजनन की समस्या तथा गेहूं में विभिन्न खरपतवार नाशियों की दक्षता पर ऑन फार्म ट्रायल आयोजित किए गए। अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन कार्यक्रम के अन्तर्गत संकर गायों में अंतर एवं बाहरी परजीवियों के नियंत्रण हेतु प्रबंधन तथा बकरियों के आवास में उचित निःसंक्रमण के उपयोग पर प्रदर्शन लगाए गए। सी.एफ.एल.डी. कार्यक्रम के अंतर्गत 09 प्रशिक्षण प्रदान किए गए, जिससे 260 किसानों ने प्रशिक्षण का लाभ लिया। इस दौरान वैज्ञानिकों द्वारा किसानों के प्रक्षेत्र पर 91 भ्रमण किए गए, जिससे 221 किसानों से संपर्क किया गया। केन्द्र पर 153 किसानों द्वारा इस तिमाही में भ्रमण किया गया। केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा 03 गोष्ठियों में 12 व्याख्यान दिए गए।
- केन्द्र पर किसान चौपाल कार्यक्रम तथा किसान सम्मान निधि कार्यक्रमों को सीधे प्रसारण के माध्यम से किसानों को दिखाया गया। केन्द्र के कार्मिकों द्वारा तीन किसान मेले में प्रतिभाग किया



संरक्षित कृषि प्रदर्शन

गया। वैज्ञानिकों द्वारा तीन रेडियो टॉक प्रसारण करने हेतु रिकॉर्ड कराए गए। केन्द्र पर 20वीं वैज्ञानिक सलाहकार समिति की बैठक निदेशक प्रसार शिक्षा, डा. जितेन्द्र क्वात्रा की अध्यक्षता में दिनांक 28 जनवरी, 2025 को आयोजित किया गया। बैठक में पंतनगर के वैज्ञानिकों व रेखीय विभाग के अधिकारियों व कृषकों द्वारा प्रतिभाग किया गया। केन्द्र में टपक सिंचाई पद्धति पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण कराया गया तथा और एग्रीकल्चर वर्क एक्सपीरियंस कार्यक्रम के अन्तर्गत स्थानीय कृषि विद्यालयों के 36 छात्रों को दिनांक 07 से 31 मार्च, 2025 तक प्रशिक्षण प्रदान किया गया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, ज्योलीकोट (नैनीताल)

- प्रथम पंक्ति प्रदर्शन के अन्तर्गत फसल गेहूँ की उन्नत प्रजाति का 30 कृषकों के 09 है., तिलहन की 150 कृषकों के 40 है., सी.एफ. एल.डी एवं मोटे अनाजों के अन्तर्गत 10 कृषकों के 02 है. प्रक्षेत्र पर प्रदर्शन आयोजित किये गये। प्रक्षेत्र परीक्षण कार्यक्रम के अन्तर्गत फसल गेहूँ में ताप के प्रभाव के प्रबन्धन के लिये पोटेसियम नाइट्रेट (KNO₃) का फोलियर छिड़काव तथा गेहूँ में विभिन्न खरपतवार नाशियों (पाइरोक्सोयलडाउन, पिनोक्साडीन, मैटासलफयूरान) के तीन परीक्षण आयोजित किये गये।
- केन्द्र द्वारा कृषक एवं महिला कृषकों के लिये कुल 06 प्रशिक्षण, महिलाओं के लिये दो दिवसीय क्षमता विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये गये। इसी क्रम में, शांभाकारी मोमबत्ती (पैराफीन वैक्स एवं सोया वैक्स) बनाने के लिये 20 महिला कृषकों को प्रशिक्षण दिया गया।
- आर्या परियोजना के अन्तर्गत अंगीकृत ग्राम में कुक्कुट पालन के अन्तर्गत बैक्याड पौल्ट्री इकाई स्थापित करने हेतु 20 कृषकों को 500 चूजे वितरित किये गये।
- अन्य प्रसार गतिविधियों के अन्तर्गत कुल 42 प्रसार कार्यक्रमों द्वारा कुल 257 पुरुष एवं महिला कृषकों को लाभान्वित किया गया। केन्द्र द्वारा चौपाल कार्यक्रम एवं किसान सम्मान निधि कार्यक्रम का प्रसारण दिनांक 08.02.2025 एवं 24.02.2025 को केन्द्र पर किया गया।
- केन्द्र की 20वीं वैज्ञानिक सलाहकार समिति की बैठक दिनांक 03.02.2025 को निदेशक प्रसार शिक्षा डा0 जितेन्द्र क्वात्रा की अध्यक्षता में सम्पन्न की गयी। बैठक में वर्ष 2024 की प्रगति आख्या एवं वर्ष 2025 की कार्ययोजना के प्रस्तुतिकरण के साथ-साथ जनपद के आवश्यकतानुरूप कार्ययोजना पर गहन मंथन किया गया।
- केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा जनवरी 11, 2025 को भा.कृ.अ.प. स्थापना दिवस, जोन-1, लुधियाना, एग्रीकल्चर साइंस कांग्रेस फरवरी 20-22, 2025 एवं सरस आजीविका मेला मार्च 01-10, 2025 में प्रतिभाग किया गया। साथ ही केन्द्र की गतिविधियों की सूचना 18 प्रेस विज्ञापितियों के माध्यम से विभिन्न समाचार पत्रों में प्रकाशित की गयी।

कृषि विज्ञान केन्द्र, गैना एंचोली (पिथौरागढ़)

- केन्द्र द्वारा कुल 20 प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित कर कुल 379 कृषक, ग्रामीण युवा व वाह्य प्रसार कार्यकर्ता लाभान्वित हुए।
- केन्द्र पर संचालित विभिन्न गतिविधियों की जानकारीयों प्राप्त

करने हेतु, कृषि व उद्यान सम्बन्धी समस्याओं के समाधान हेतु 548 किसानों द्वारा केन्द्र पर भ्रमण किया गया। वैज्ञानिकों द्वारा 03 रेडियो वार्ता कार्यक्रम दिए गए व दैनिक समाचार पत्रों द्वारा जनहित में प्रचार-प्रसार हेतु 04 तकनीकी समाचारों को प्रकाशित किया गया।

- केन्द्र के विशेषज्ञों द्वारा अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन के अन्तर्गत गेहूँ-10.0 है., सरसों-5.0 है., मसूर-3.0 है., पत्तागोभी-1.0 है. प्याज-1.0 है., मिण्डी-0.5 है., कीवी-0.5 है., आम-0.5 है., पोषण बगीचा के अन्तर्गत 250 कृषकों को 02 पैकेट सब्जी बीज कीट का वितरण किया गया।
- केन्द्र के विषय वस्तु विशेषज्ञ द्वारा आई.सी.ए.आर., अटारी जोन-1, लुधियाना में जनवरी 20-24, 2025 को आयोजित ओरिएंटेशन कार्यक्रम में प्रतिभाग किया गया। केन्द्र पर फरवरी 08, 2025 को कृषि चौपाल कार्यक्रम का सजीव प्रसारण छात्रों का भ्रमण कार्यक्रम कृषकों को दिखाया गया। इसी क्रम में फरवरी 24, 2025 को पीएम किसान सम्मान कार्यक्रम का सीधा प्रसारण केन्द्र द्वारा किसानों को दिखाया गया।
- 'वैज्ञानिक सलाहकार समिति' की 20वीं बैठक का आयोजन डा. जितेन्द्र क्वात्रा, निदेशक प्रसार शिक्षा, गो.ब. पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पंतनगर की अध्यक्षता में दिनांक 12 फरवरी, 2025 को सम्पन्न हुई। बैठक में विभिन्न वैज्ञानिकों एवं अधिकारियों द्वारा अनेक कृषकोपयोगी सलाह दिये गये।
- पंतनगर विश्वविद्यालय में आयोजित 117वें अखिल भारतीय किसान मेला व उद्योग प्रदर्शनी मार्च 07-10, 2025 में पिथौरागढ़ जिले की श्रीमती कलावती देवी, ग्राम-बालाकोट विकास खण्ड-विण, जनपद-पिथौरागढ़ को प्रगतिशील कृषक के रूप में सम्मानित किया गया।
- केन्द्र पर मार्च 27, 2025 को डा. परविन्दर श्योराण, निदेशक, भा.कृ.अ.प.-कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान (अटारी), लुधियाना द्वारा भ्रमण किया गया। उनके द्वारा केन्द्र पर स्थापित मधुमक्खी पालन यूनिट, आई0पी0एम0 इकाई, कुक्कुट पालन इकाई, प्राकृतिक खेती इकाई, स्वचालित मौसम इकाई, मछली एवं सिचाई टैंक, पॉलीहाउस आदि का अनुश्रवण करते हुए अनेक सलाह दिया गया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, जाखधार (रुद्रप्रयाग)

- केन्द्र द्वारा 03 ऑन फार्म ट्रायल, 02 अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन तथा 10 प्रशिक्षण आयोजित किये गये। आतमा योजनान्तर्गत जनपद स्तरीय कृषक प्रशिक्षण केन्द्र में आयोजित किया गया, जिसमें रबी फसल उत्पादन, सब्जी उत्पादन, फल उत्पादन, मशरूम उत्पादन, फल संरक्षण तथा बेकरी उत्पाद विषयों पर कृषकों को 03 दिवसीय प्रशिक्षण दिया गया।
- केन्द्र के शैक्षणिक मधुमक्खी पालन इकाई में ऐपिस सिराना इण्डिका प्रजाति का पालन किया जा रहा है एवं एक नई कालोनी भी स्थापित की गई है।

नवीन मौनपालन इकाई की स्थापना

शैक्षणिक मशरूम उत्पादन इकाई में ढिंगरी मशरूम का उत्पादन किया जा रहा है।

- दिनांक 07-10 मार्च, 2025 को पंतनगर विश्वविद्यालय में किसान मेले में केन्द्र द्वारा प्रतिभाग किया गया। मेले में जनपद के प्रगतिशील कृषक, श्री आशीष राणा, ग्राम-हयून, विकास खण्ड-ऊखीमठ को “प्रगतिशील कृषक सम्मान” से विभूषित किया गया।
- केन्द्र के प्रक्षेत्र पर 200 वर्ग मीटर क्षेत्रफल का एक नये पॉलीहाउस का निर्माण किया गया है, जिसमें बैमोसमी सब्जियों का उत्पादन किया जाना प्रस्तावित है। खरीफ सब्जी उत्पादन के तहत केन्द्र में टमाटर की हिमशिखर, इण्डम 1313, शिमला मिर्च की इंदरा, खीरा की डॉन, छप्पन कद्दू की चैंपियन, जुकनी प्रजातियों की नर्सरी लगाई गयी है। शीतोष्ण फल पौध उत्पादन एवं बढ़ती मांग को दृष्टिगत रखते हुए आड़ू की ब्लेजिंग स्टार, ग्लोइंग स्टार, फ्लेमिंगफरे, जुलाई अल्बर्टा, प्लम की ब्लैकअंबर, ड्यूराटे, शीरो, प्लमकॉट, इटेलियन प्लम, खुबानी की शक्करपारा, हरकोट, कीवी की हैवर्ड, एलीसन एवं तोमड़ी प्रजातियों के पौधों को प्रवर्धित किया गया है जो अगले वर्ष बिक्री हेतु उपलब्ध होंगे।
- कृषि विज्ञान केन्द्र, जाखधार (रूद्रप्रयाग) के वैज्ञानिकों द्वारा चौलाई के डॉनट तथा केक, मौसमी फलों (गलगल, नींबू) एवं मशरूम का मूल्यसंवर्धन, माल्टा, गलगल एवं बुरांश का स्ववैश भी बनाया गया।
- कृषि विज्ञान केन्द्र, जाखधार में दिनांक 24 फरवरी, 2025 को माननीय प्रधानमंत्री जी, भारत सरकार द्वारा बिहार के भागलपुर में आयोजित ‘किसान सम्मान समारोह’ से किसानों को पी.एम. किसान योजना की 19वीं किश्त जारी की गयी। उपरोक्त कार्यक्रम का सजीव प्रसारण केन्द्र पर देखा गया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, काशीपुर (ऊधमसिंहनगर)

- ऑन फार्म ट्रायल के अन्तर्गत गन्ने में विभिन्न शाकनाशी का मूल्यांकन, उच्च गुणवत्ता के राशन द्वारा मत्स्य वृद्धि को बढ़ावा, पोषक युक्त मिश्रण महिलाओं हेतु गोबर संग्राहक, आलू की फसल में फफूंदी नाशक का मूल्यांकन, रसायन KNO₃ का गेंहू की में पत्तियों पर छिड़काव जैसे परीक्षणों का आयोजन किया गया।
- अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन के अन्तर्गत ट्रांसप्लान्ट एवं स्प्रिंग ब्रेक रेक का उपयोग, सब्जी फसल-फूल गोभी प्याज, पोषण वाटिका, बटन मशरूम आदि प्रदर्शनों का अनुश्रवण तथा मत्स्य के अन्तर्गत पोषक तत्व प्रबन्धन के माध्यम से उत्पादन प्रदर्शन, डी.ओ. में सुधार कर तालाब जल प्रबन्धन, विटामिन की खुराक से मांसपेशियों में विकास कर मत्स्य उत्पादन में वृद्धि हेतु प्रदर्शन आयोजित किये गये।
- कृषक/कृषक महिलाओं हेतु कुल 13 प्रशिक्षण कार्यक्रम एवं स्किल डेवलपमेंट प्रशिक्षण आयोजित कर 318 प्रतिभागियों को लाभान्वित किया गया। पंतनगर विश्वविद्यालय में आयोजित 17वीं कृषि विज्ञान कांग्रेस, फरवरी 20-22, 2025 में केन्द्र के वैज्ञानिकों, कार्मिकों एवं कृषकों द्वारा प्रतिभाग किया गया।
- प्रक्षेत्र की गतिविधियों के अन्तर्गत गेंहू, में रसायन छिड़काव, ड्रोन प्रदर्शन, एक्वापोनिक यूनिट प्रदर्शन, बकरी पालन, सोलर ड्रायर, साहीवाल गाय प्रदर्शन ईकाई, पॉली हॉउस में टमाटर पौध



17वें कृषि विज्ञान सम्मेलन में केन्द्र का स्टॉल

उत्पादन, बैंगन, मिर्च, खीरा, लौकी, कद्दू, करेला आदि का उत्पादन कर कृषकों को उपलब्ध कराया गया।

- वैज्ञानिकों द्वारा 34 भ्रमण कार्यक्रम आयोजित कर 445 कृषकों को लाभान्वित किया गया एवं केन्द्र पर 24 भ्रमण कार्यक्रम में 115 कृषक लाभान्वित हुए। इसी क्रम में 22 व्याख्यान, 07 फिल्म शो, 07 समाचार पत्र, 01 स्किल डेवलपमेंट प्रशिक्षण, एफ.पी.ओ. हेतु बकरी पालन पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण एवं किसान गोष्ठी का आयोजन किया गया।

सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय की गतिविधियाँ

- समुदायिक विज्ञान महाविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस 8 मार्च 2025, के अवसर पर आयोजित कार्यशाला में महिलाओं के सशक्तिकरण, पोषण महत्व तथा उपभोक्ता सुरक्षा के बारे में व्याख्यान दिया गया।
- 07-10 मार्च 2025 के मध्य आयोजित 117वें अखिल भारतीय किसान मेले में खाद्य एवं पोषण विभाग के बी.एस.सी. अंतिम वर्ष के छात्र-छात्राओं द्वारा मेले में कृषकों के लिए स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें उनकी ऊंचाई एवं वजन मापा गया तथा पोषण के साथ-साथ शारीरिक स्वास्थ्य का मूल्यांकन किया गया। इच्छुक कृषकों को पोषण संबंधी सलाह भी प्रदान की गई।

प्रसार शिक्षा निदेशालय की गतिविधियाँ

समेटी-उत्तराखण्ड द्वारा आयोजित प्रशिक्षण

समेटी-उत्तराखण्ड द्वारा इस अवधि में कुल दो प्रशिक्षण आयोजित किये गये। प्रशिक्षण के मुख्य विषय व्यावसायिक मशरूम उत्पादन एवं डिजिटल कृषि सम्बन्धी प्रशिक्षण आयोजित कराये गये।

इसके अलावा समेटी-उत्तराखण्ड एवं प्रसार प्रशिक्षण संस्थान, नीलोखेड़ी, हरियाणा (भारत सरकार) के संयुक्त तत्वाधान में प्रसार अधिकारियों के क्षमता विकास हेतु



मशरूम शोध एवं प्रशिक्षण केन्द्र का भ्रमण

“प्रौद्योगिकी हस्तान्तरण के लिए विस्तार अधिकारियों का क्षमता विकास” विषयक प्रशिक्षण भी आयोजित किया गया। इन कार्यक्रमों में मशरूम उत्पादक, कृषि/उद्यान/आतमा के अधिकारी एवं प्रगतिशील कृषक सहित कुल 81 प्रशिक्षणार्थियों ने प्रतिभाग किया।

समेटी-उत्तराखण्ड द्वारा अप्रैल-जून, 2025 में आयोजित होने वाले प्रशिक्षण

क्र.सं.	विषय	दिनांक
1.	उन्नत खरीफ फसलोत्पादन तकनीक	अप्रैल 24-26, 2025
2.	आय वृद्धि हेतु कुक्कुट पालन	मई 28-31, 2025
3.	जैविक खेती एवं जैविक फसल एवं सब्जी उत्पादन तकनीक	जून 25-28, 2025

डिप्लोमा कोर्स ‘डेसी’ की प्रगति

संस्थान द्वारा डेसी कोर्स (टी.पी. संख्या-2731) आयोजित किया जा रहा है। कोर्स में कुल 42 कृषि निवेश वितरक पंजीकृत हैं। वर्तमान में कोर्स का 39 सप्ताह सम्पन्न किया जा रहा है।

पौड़ी गढ़वाल में किसान मेले का आयोजन

प्रसार शिक्षा निदेशालय, गो.ब. पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पंतनगर द्वारा ग्राम-बिथ्याणी, विकास खण्ड-यमकेश्वर,



विश्व्याणी कृषि मेले का उद्घाटन करते अतिथिगण

जनपद-पौड़ी गढ़वाल में दिनांक फरवरी 05-06, 2025 को किसान मेले का आयोजन किया गया। मेले का उद्घाटन मा. मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश, श्री योगी आदित्यनाथ जी द्वारा किया गया। मा. मुख्यमंत्री ने कहा कि खाद्य सुरक्षा में न केवल प्रदेश बल्कि पूरे देश में पंत विश्वविद्यालय का योगदान सर्वविदित है। मुझे विश्वास है कि विश्वविद्यालय उत्तराखण्ड के कृषि विकास हेतु सदैव समर्पित रहेगा। कार्यक्रम में श्री सतपाल महाराज, मा. मंत्री, पंचायती राज एवं ग्रामीण विकास व डा. धन सिंह रावत, मा. मंत्री, सहकारिता एवं उच्च शिक्षा द्वारा विचार व्यक्त किये गये। कुलपति, डा. मनमोहन सिंह चौहान ने विश्वविद्यालय द्वारा विकसित कृषि तकनीकों के बारे में चर्चा करते हुए कृषकों से अपील किया कि वे तकनीकों से लाभ लेने हेतु कभी भी सम्पर्क कर सकते हैं। निदेशक प्रसार शिक्षा, डा. जितेन्द्र क्वात्रा ने धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कहा कि उत्तराखण्ड के कृषि विकास हेतु विश्वविद्यालय सदैव कृषकों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़ा रहेगा। इस अवसर पर क्षेत्र के अनेक किसान, स्वयं सेवी संस्थाएं, विश्वविद्यालय व कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिक एवं कर्मचारी आदि उपस्थित रहे।

प्रशिक्षण एवं भ्रमण इकाई द्वारा आयोजित कार्यक्रम

प्रशिक्षण एवं भ्रमण इकाई द्वारा कुल 20 प्रायोजित प्रशिक्षणों का आयोजन किया गया, जिससे 940 प्रशिक्षणार्थी लाभान्वित हुए। प्रशिक्षण कार्यक्रम के विषय कृषि विविधिकरण, पशुपालन प्रबन्धन एवं कृषि इत्यादि से सम्बन्धित थे।

कृषि प्रौद्योगिकी सूचना केन्द्र (एटिक)

भ्रमण पर आये 334 कृषकों/आगन्तुकों को एकल खिड़की वितरण प्रणाली के अन्तर्गत विभिन्न गतिविधियों की जानकारी एवं फसलों व सब्जियों के बीज, साहित्य उपलब्ध कराये गये। कृषकों एवं अन्य हितधारकों को ₹ 62,740.00 मूल्य के विभिन्न विषयों के 632 कृषि साहित्य/पुस्तक एवं ₹ 59,300.00 मूल्य के विभिन्न धान एवं सब्जियों यथा- लोबिया, धनिया, भिण्डी, बैंगन, पालक, मेथी, लौकी, टमाटर, मूली एवं तोरई आदि के 0.69 कुन्तल बीज केन्द्र के विक्रय पटल से उपलब्ध कराये गये। इस अवधि में कृषक हैल्पलाइन/कॉल सेन्टर 05944-234810 के माध्यम से किसानों एवं अन्य हितधारकों द्वारा पूछे गये समस्याओं/जिज्ञासाओं का समाधान विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा किया गया।

समन्वित कृषि प्रणाली इकाई

कृषक भवन एवं प्रशिक्षण केन्द्र (समेटी) के परिसर में रसायन मुक्त खेती, कृषकों के क्षमता विकास एवं कृषि शिक्षा सम्बन्धी ज्ञानवर्धन हेतु समन्वित कृषि प्रणाली इकाई स्थापित की गयी है। वर्तमान में इस प्रदर्शन प्रक्षेत्र पर लौकी, कद्दू, तोरई, करेला, फ्रासबीन, प्याज, चौलाई इत्यादि के प्रदर्शन आयोजित किये जा रहे हैं। इस इकाई से परिसर एवं

स्थानीय निवासियों को ताजी व रसायन मुक्त सब्जियों की उपलब्धतानुसार आवश्यकता की पूर्ति की जाती है। आगन्तुकों एवं प्रशिक्षण दौरान आये हुए कृषकों को यह इकाई कम कृषि लागत से अधिक आय अर्जन हेतु प्रेरित करती है।

सफलता की कहानी

मौन पालन एवं मशरूम उत्पादन- सुखद भविष्य की राह



श्री हरीश सजवान, ग्राम-डोलमार, विकास खण्ड-भीमताल, जनपद-नैनीताल के निवासी हैं। श्री सजवान जी पेशे से ऑटो इलेक्ट्रिक इंजीनियर हैं। वर्ष 2016 में नोटबंदी की मार पड़ने के कारण आपको अपने व्यवसाय में भारी आर्थिक क्षति हुई। परिणाम स्वरूप आपने दिल्ली से अपने पैतृक घर नैनीताल लौटकर उन्नत कृषि द्वारा स्वरोजगार चुनने का संकल्प लिया। प्रारम्भ में अनेक चुनौतियों का सामना व समस्याओं से जूझते हुए अन्ततः मत्स्य पालन की एक छोटी सी इकाई से शुरुआत की। मत्स्य विभाग से मत्स्य पालन की जानकारी लेने के दौरान आपको समेटी-उत्तराखण्ड द्वारा आयोजित होने वाले प्रशिक्षणों की जानकारी हुई। अपने विभाग द्वारा अपना नामांकन कराया और प्रशिक्षण प्राप्त किया। आपने विभिन्न विषयों जैसे- मशरूम उत्पादन, मौन पालन, बकरी पालन, एवं मत्स्य पालन प्रशिक्षण प्राप्त करने के दौरान घर में छोटी-छोटी इकाईयों से कृषिकरण प्रारम्भ किया। वर्तमान में मत्स्य पालन के अतिरिक्त आपने मशरूम उत्पादन और मौन पालन को बड़े उद्यम के रूप में अपनाते हुए स्वरोजगार स्थापित किया है। आप मौन पालन व मशरूम उत्पादन तक ही सीमित न रहते हुए अनेक प्रकार की हल्दी, काला आलू, काला गोहूँ, काला टमाटर, काला मक्का इत्यादि कई नये विषयों पर कार्य कर रहे हैं और आपका कहना है कि इन सब में समेटी, पंतनगर द्वारा प्राप्त प्रशिक्षणों का महती योगदान है। आप कहते हैं कि उन्नत कृषि ने ऑटो इलेक्ट्रॉनिक इंजीनियर को सफल कृषक के रूप में विशिष्ट स्थान दिलाया। राजभवन, नैनीताल में आयोजित हनी उत्सव, 2024 में आपको मौन पालन में अभिनव तकनीकें अपना कर आय में वृद्धि करने एवं अन्य कृषकों को प्रेरित करने के लिए 'कृषक सम्मान' से विभूषित किया गया। वर्ष 2024 में आपको उत्तराखण्ड दिवस के अवसर पर 'किसान सम्मान' एवं वर्ष 2025 में सरस मेले में आपको उद्यान विषय में 'किसान श्री' जैसे पुरस्कारों से विभूषित किया गया। श्री सजवान ने बताया कि दिल्ली से आने के पश्चात् प्रारम्भ में खेती से जहाँ मुश्किल से ₹ 50 हजार मिलते थे, उन्नत तकनीक और परिश्रम के बल पर आज लगभग ₹ 2.50 लाख की वार्षिक आय हो रही है।

निदेशक की कलम से

उत्तराखण्ड के पर्वतीय क्षेत्रों में अधिकांश कृषक आज भी पारम्परिक रूप से खेती करते हैं और वे ज्यादातर आधुनिक कृषि के आयामों से अछूते हैं। इसका कारण कृषकों की छोटी व बिखरी जोत का होना, उन्नत कृषि निवेशों का न्यूनतम प्रयोग, सिंचाई का अभाव एवं विकसित कृषि तकनीक का समुचित हस्तान्तरण न होना है। कृषकों तक उन्नत कृषि तकनीकी पहुँचाने में विभिन्न रेखीय विभागों, कृषि विज्ञान केन्द्रों तथा स्वयं सेवी संस्थाओं का अहम योगदान है। कृषकों को उनके क्षेत्र व परिस्थितियों के अनुरूप कम लागत की तकनीक उपलब्ध होने की स्थिति में वे उसका प्रयोग कर अपनी पैदावार में बढ़ोत्तरी व अन्ततः अपनी आर्थिक स्थिति को मजबूत कर सकते हैं। सर्व विदित है कि पर्वतीय क्षेत्रों में छोटे-छोटे सीढ़ीनुमा बिखरे खेत, वर्षा आधारित कृषि, उन्नत कृषि निवेशों का न्यूनतम प्रयोग इत्यादि कुछ ऐसे कारक हैं, जो प्रायः उपज पर प्रतिकूल प्रभाव डालते हैं। इस स्थिति से निपटने हेतु वैज्ञानिक, अधिकारी और प्रसार कार्यकर्ताओं को मिलकर समग्र प्रयास करना होगा। कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा कृषकों के प्रक्षेत्रों पर अग्रिम पंक्ति प्रदर्शनों एवं प्रक्षेत्र परीक्षणों के आयोजन के साथ-साथ विभिन्न प्रसार गतिविधियों का संचालन किया जा रहा है, जो कृषकों हेतु काफी लाभकारी साबित हो रहा है। भारत सरकार के प्रमुख कार्यक्रम यथा मोटे अनाजों एवं प्राकृतिक खेती को प्रोत्साहित करना, दलहनों एवं तिलहनी फसलों पर क्लस्टर प्रदर्शन जैसे विषयों को भी इन केन्द्रों के माध्यम से बढ़ावा दिया जा रहा है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका कृषकों, रेखीय विभागों के अधिकारियों व प्रसार कार्यकर्ताओं एवं अन्य हितधारकों के लिए मार्गदर्शक की भूमिका निभाएगा। इस पत्रिका के प्रकाशन के लिए सम्पादक डा. बी.डी. सिंह, प्राध्यापक द्वारा किये गये अथक प्रयास हेतु मैं उन्हें बधाई देता हूँ।



(डा० जितेन्द्र क्वात्रा)

निदेशक, प्रसार शिक्षा एवं समेटी-उत्तराखण्ड

आभार

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से अब तक देश में खाद्यान्न उत्पादन में कई गुना बढ़ोत्तरी हुई है, जिसमें किसानों, नीति नियंताओं व कृषि वैज्ञानिकों का अहम योगदान रहा है। किन्तु खेती में यह तरक्की सिंचित क्षेत्रों में एवं बड़े कृषकों तक अधिक रही है। देश के अधिकांश सीमांत व लघु कृषक आज भी इस विकास से अछूते हैं, जिसके अनेक कारण जैसे कृषकों में तकनीकी जानकारी व जागरूकता का अभाव, परम्परागत खेती, महंगे कृषि निवेश, समुचित बाजार व्यवस्था का अभाव आदि प्रमुख हैं। इसके विपरीत अनेक ऐसे भी कृषक हैं जो आधुनिक कृषि को व्यवसाय के रूप में अपनाकर अच्छी आय अर्जित करने के साथ-साथ अन्य कृषकों हेतु प्रेरणा स्रोत बनकर उभर रहे हैं। वर्तमान परिस्थितियों में आवश्यकता इस बात की है कि कृषकों एवं बेरोजगार युवाओं को अधिकाधिक संख्या में कृषि एवं कृषि आधारित व्यवसायों हेतु प्रेरित किया जाये। इस कार्य में कृषि विज्ञान केन्द्रों के वैज्ञानिक व रेखीय विभागों के प्रसार कर्मी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। “पंत प्रसार संदेश” का वर्तमान अंक आपके हाथों में है जिसमें विभिन्न प्रसार गतिविधियों के साथ-साथ आगामी त्रैमास में किये जाने वाले महत्वपूर्ण कृषि कार्यों की जानकारी भी दी गयी है। इस पत्रिका को तैयार करने में डा. जितेन्द्र क्वात्रा, निदेशक प्रसार शिक्षा द्वारा दिये गये मार्गदर्शन एवं परामर्श हेतु उनका आभार व्यक्त करता हूँ। सभी कृषि विज्ञान केन्द्रों के प्रभारी अधिकारियों एवं वैज्ञानिकों तथा मुख्यालय के वैज्ञानिकों के सहयोग हेतु भी मैं आभारी हूँ। पत्रिका को और बेहतर बनाने में आपके सुझाव महत्वपूर्ण होंगे। आप अपने सुझाव पत्रिका के अन्तिम पेज पर अंकित फोन नं. अथवा ई-मेल आई.डी. पर प्रेषित कर सकते हैं।

धन्यवाद।



(डा० बी.डी. सिंह)

प्राध्यापक (सस्य विज्ञान)

प्रसार शिक्षा निदेशालय, गो.ब. पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पंतनगर (ऊधम सिंह नगर), उत्तराखण्ड

दूरभाष : 05944-233336, 233811, ई-मेल : directedugbp@gmail.com

हेल्प लाइन : 05944-234810

संरक्षक : डॉ० मनमोहन सिंह चौहान, कुलपति; मुख्य सम्पादक : डॉ० जितेन्द्र क्वात्रा, निदेशक, प्रसार शिक्षा एवं समेटी

सम्पादक : डॉ० बी.डी. सिंह, प्राध्यापक (सस्य विज्ञान)